प्राथमिक समूह

प्राथमिक समूह और द्वितीयक समूह के बीच के अंतर को स्पष्ट करने के पहले हमें प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझ लेना होगा। प्राथमिक समूह की अवधारणा का जिक्र सर्वप्रथम सी० एच० कूली की पुस्तक **Social Organization** (1909) में देखने को मिलता है । उनके अनुसार, "प्राथमिक समूहों से हमारा तात्पर्य उन समूहों से है, जिनमें सदस्यों के बीच आमने-सामने के घनिष्ठ सम्बन्ध एवं पारस्परिक सहयोग की विशेषता होती है। ऐसे समूह अनेक अर्थों में प्राथमिक होते हैं, लेकिन विशेष रूप से इस अर्थ में कि ये व्यक्ति के सामाजिक स्वभाव और विचार के निर्माण में बुनियादी योगदान देते हैं" (By primary groups I mean those characterized by intimate face-to-face association and cooperation. They are primary in several senses, but chiefly in that they are fundamental in forming the social nature and ideas of the individual.)

प्राथमिक समूह का विचार कूली का समाजशास्त्र के क्षेत्र में संभवत: सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। इस योगदान के लिए वे आज विश्व प्रसिद्ध हैं। उन्हें भी ऐसा पूर्वाभास हुआ था कि इसके लिए वे भविष्य में जाने जायेंगे। उन्होंने स्वयं एक बार हँसते हुए कहा था कि प्राथमिक समूह की अवधारणा के लिए उन्हें इस दुनिया में हमेशा याद किया जायेगा।

इस अवधारणा को प्रस्तुत करने के पीछे कूली का मुख्य उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि मानव व्यक्तित्व के विकास में कुछ ऐसे समूह होते हैं जिनकी महत्वपूर्ण या प्राथमिक भूमिका होती है। इसीलिए इन्हें प्राथमिक समूह कहा जा सकता है। कूली की परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक समूह में शारीरिक नजदीकी, घनिष्ठ सम्बन्ध एवं पारस्परिक सम्बन्ध का होना आवश्यक है। कूली ने परिवार (Family), पड़ोस (Neighbourhood) एवं क्रीड़ा समूह (Play Group) को प्राथमिक समूह का एक अच्छा उदाहरण माना है। इस उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक समूह की

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सबसे प्रमुख विशेषताओं में 'वयं भावना' (We-feeling) बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्राथमिक समूह अपने आप में बहुत ही मजबूती से बँधा हुआ समूह है जिसमें आमने-सामने के सम्बन्धों के अलावा एकता की भावना प्रबल रूप से पायी जाती है। सदस्यों में एक सामान्य सामाजिक मूल्यों के प्रति कटिबद्धता पायी जाती है।

कूली ने अपनी परिभाषा में जिस "आमने-सामने का सम्बन्ध" का उल्लेख किया है, वह समाजशास्त्रियों के बीच काफी विवाद का विषय बन गया। डेविस (K. Davis) ने कहा कि आमने-सामने का सम्बन्ध प्राथमिक समूह का आधार नहीं हो सकता है क्योंकि आमने-सामने का सम्बन्ध रखते हुए भी कभी दो व्यक्तियों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं पनपता है एवं इसके विपरीत लम्बे समय तक आमने-सामने का सम्बन्ध नहीं रहते हुए भी घनिष्ठ सम्बन्ध पनप सकता है। उदाहरणस्वरूप, एक ऑफिस में काम करने वाले कर्मचारी, जो रोज एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं, एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित नहीं होते हैं। इसके विपरीत पिता-पुत्र एक दूसरे से हजारों मिल की दूरी पर रहते हुए भी आमने-सामने के सम्बन्ध के अभाव में भी एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं। ई० फैरिस (E. Faris)[3] ने भी कहा है कि आमने-सामने के सम्बन्ध के अभाव में भी सामाजिक निकटता पायी जा सकती है। नातेदारी समूह (Kin Group) इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि लोग आमने-सामने नहीं रहते है, लेकिन उनके बीच आपसी निकटता की भावना बहुत पायी जाती है।

दूसरी ओर बीयरस्टेट ने कूली के विचारों का अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन प्रदान करते हुए यह कहा है कि कूली के द्वारा उल्लेखित "आमने-सामने" शब्द को शाब्दिक रूप से नहीं लेना है, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से लेना है। इस शब्द के द्वारा कूली मात्र सम्बन्धों की घनिष्ठता का बोध करना चाहते हैं।

प्राथमिक समूह की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. **लघु आकार (Smaller Size)**- प्राथमिक समूह तुलनात्मक दृष्टि से काफी छोटा समूह होता है। यह कहना मुश्किल है कि ऐसे समूह में अधिक-से-अधिक कितने सदस्य पाए जाते हैं, लेकिन यह निश्चित है कि ऐसे समूह में अधिक सदस्य नहीं हो सकते हैं। सीमित आकार के कारण ही सदस्यों में परस्पर अंत:क्रिया संभव है, जिसके कारण एक प्रकार की भाईचारे एवं आदान-प्रदान वाली भावना का जन्म होता है।

2. **आमने-सामने का सम्बन्ध (Face-to-face Relationship)**- प्राथमिक समूह के सदस्यों के बीच भौतिक या मानसिक समीपता पाई जाती है। इसका अर्थ यह है कि सभी सदस्य अपने बीच अनुभवों या विचारों का सहजता से आदान-प्रदान करते हैं। आमने-सामने का तात्पर्य प्रतिदिन एक-दूसरे से मिलते रहने का नहीं है, जैसा कि कई

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

लोगों ने लिखा है। ऐसे समूहों में रहकर सदस्य सामाजिक जीवन की बुनियादी बातों को जानते हैं। कभी-कभी आमने-सामने की स्थिति के बावजूद लोग प्राथमिक समूह का निर्माण नहीं कर पाते हैं।

3. तुलनात्मक स्थिरता (Relative Permanency)– स्थिरता के अभाव में घनिष्ठता की कल्पना नहीं की जा सकती। डेविस का विचार है कि समूह में जितनी अधिक स्थिरता होगी सदस्यों के सम्बन्धों में भी उतनी ही अधिक घनिष्ठता भी होगी। वास्तव में, प्राथमिक समूहों का निर्माण जान-बूझकर या योजनाबद्ध तरीके से न होने के कारण यह अधिक स्थायी प्रकृति का होता है और लोगों को इसकी सदस्यता से अलग होना भी कठिन होता है।

4. लक्ष्यों की समानता (Common Goals)– प्राथमिक समूह के सदस्यों में उद्देश्यों और हितों की समानता पायी जाती है। प्राथमिक समूह में प्रत्येक सदस्य दूसरे के कल्याण को ध्यान में रखकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। उदाहरणस्वरूप परिवार एक प्राथमिक समूह है जिनमें माता-पिता अपने बच्चों की देख-देख करने में अपने स्वास्थ्य की भी चिन्ता नहीं करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि बच्चों की देखरेख करना उनका अंतिम उद्देश्य है, बल्कि वास्तव में बच्चे का सुख-दुख ही माँ-बाप का सुख-दुख बन जाता है। इस प्रकार प्राथमिक समूह में 'मैं' की भावना ('I' feeling) की जगह वयं भावना ('We' feeling) पायी जाती है।

5. स्वत:विकसित समूह (Spontaneous Development)– प्राथमिक समूह का जन्म स्वत: होता है। इसका तात्पर्य यह है कि जान-बूझकर और कुछ लक्ष्यों को सामने रखकर प्राथमिक समूह का निर्माण नहीं किया जाता है। दो-चार व्यक्तियों में जब आपसी घनिष्ठता काफ़ी बढ़ जाती है, तो प्राथमिक समूह का स्वरूप स्वत: तैयार हो जाता है।

6. प्राथमिक समूह में व्यक्तिगत और घनिष्ठ सम्बन्धों की प्रधानता (Personal and Intimate Relationship)– प्राथमिक समूह में सदस्यों के बीच व्यक्तिगत सम्बन्ध होते हैं। ऐसे समूहों में सदस्य अपने विचारों या भावनाओं को खुलकर एक-दूसरे को सुनाते हैं। एक सदस्य को दूसरे सदस्य पर पूर्ण विश्वास एवं आस्था होती है। प्राथमिक समूहों में सम्बन्धों की स्थापना किसी बाह्य प्रलोभन अथवा बाह्य दबाव से नहीं होती, बल्कि इनका विकास स्वाभाविक रूप से होता है। जैसे एक परिवार में माता, पिता, भाई, बहन के पारस्परिक सम्बन्ध, जो किसी बाहरी प्रभाव के फलस्वरूप विकसित नहीं होते, बल्कि ये अपने आप स्वाभाविक रूप से होते हैं। इनकी प्रकृति आत्मिक होती है।

7. समाजीकरण के अभिकरण के रूप में– प्राथमिक समूह किसी व्यक्ति के जीवन में वैसा समूह है जहाँ उसका बचपन व्यतीत होता है। बचपन का समय व्यक्ति के जीवन का एक ऐसा समय होता है जिस अवस्था में बच्चे को जो कुछ भी सिखलाया जाता है वह उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाता है। कूली ने प्राथमिक समूह को

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्राथमिक समूह इसलिए कहना पसन्द किया क्योंकि व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में इसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण या बुनियादी भूमिका होती है।

8. अनौपचारिक सम्बन्ध– प्राथमिक समूह के सदस्यों के बीच का सम्बन्ध अनौपचारिक होता है। सम्बन्ध की घनिष्ठता सम्बन्धों को अनौपचारिक रूप प्रदान करता है। साथ ही प्राथमिक समूह का संगठन भी बहुत हद तक अनौपचारिक ही होता है। यह सही है कि इसमें विभिन्न पदों की भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ होती हैं। परन्तु ये भूमिकाएँ प्रायः परस्परव्यापी (Overlapping) होती हैं। उदाहरणस्वरूप सन्तान के लिए माँ जहाँ अभिभावक है, वहाँ आवश्यकता पड़ने पर सेवा भी करती है, भोजन पकाती है तथा सही सलाह देती है। यही बात एक व्यक्ति अपने ऑफिस के उच्चाधिकारी से आशा नहीं कर सकता है क्योंकि वहाँ उनकी भूमिका औपचारिक होने के कारण पूर्व निर्धारित एवं निश्चित है।

9. सर्वव्यापकता (Universality)– प्राथमिक समूह एक विश्वव्यापी सामाजिक समूह है। दुनिया के किसी भी कोने में ऐसा कोई भी समाज नहीं है जहाँ प्राथमिक समूह नहीं पाया जाता हो । इस तथ्य की पुष्टि इस बात से होती है कि परिवार एवं मित्र-मण्डली जैसी सामाजिक व्यवस्था विश्व के प्रत्येक समाज एवं सामाजिक विकास के प्रत्येक चरणों या कालों में पायी जाती है। विश्व स्तर पर प्राथमिक समूह एक स्थायी सामाजिक व्यवस्था है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner